



अमीरे अहले सुन्नत की किताब “आशिकाने रसूल की 130 हिकायात” से एक किस्त

हैवानात व जिन्नात (सफ़्हात: 16) के वाकिआत

चमकीला सांप

02

बाग़ के जिन्नात

06

तवाफ़े काबा करने वाला ऊंट

13

कबूतरों की आस्तानए महबूब से महबूबत

16

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अक्तर क़ादिरि रज़वी
وَأَمَّا بَرَكَاتُهُ
الْحَالِيَّة

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيِّنَّ ط
مَا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हैवानात व जिन्नात के वाकिआत⁽¹⁾

दुआए अत्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला “हैवानात व जिन्नात के वाकिआत” पढ़ या सुन ले उस की मूजी जानवरों और शरीर जिन्नात से हिफाजत फ़रमा और उस को मां बाप समेत बे हिसाब बख़्श दे।
اٰمِيْنَ بِجَاوِزَاتِهِ السَّيِّئَاتِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ से रिवायत है कि बीबी आमिना के लाल एक मरतबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी पीछे हो लिया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक बाग़ में दाख़िल हुए और सज्दे में तशरीफ़ ले गए। सज्दे को इतना तवील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं अल्लाह पाक ने रूहे मुबारका क़ब्ज़ न फ़रमा ली हो। चुनान्चे मैं क़रीब हो कर बग़ौर देखने लगा। जब सरे अक्कदस उठाया तो फ़रमाया : “ऐ अब्दुर्रहमान ! क्या हुवा ?” मैं ने अपना ख़दशा ज़ाहिर कर दिया तो फ़रमाया : जिब्रईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मुझ से कहा : “क्या आप को येह बात ख़ुश नहीं करती कि अल्लाह पाक फ़रमाता है कि जो तुम पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस पर रहमत नाज़िल फ़रमाऊंगा और जो तुम पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलामती उतारूंगा।” (مسند امام احمد، 1/406، حديث: 11662)

ज़माने वाले सताएं, दुरूदे पाक पढ़ो जहां के ग़म जो रुलाएं, दुरूदे पाक पढ़ो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1... येह मज़मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब “आशिक़ाने रसूल की 130 हिकायात” के सफ़हा 166 ता 184 से लिया गया है।

काबए मुशरफ़ा का तवाफ़ करने वाली जिन्न औरतें

मशहूर सहाबी हज़रते अब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक रात चन्द औरतों को तवाफ़े काबा करता देख कर मैं वर्तए हैरत में डूब गया ! (क्यूंकि वोह आम औरतों की तरह नहीं थीं) जब वोह फ़ारिग हुई तो बाहर निकल गई। मैं उन के तआकुब में खाना हुवा, वोह चलती रहीं यहां तक कि वोह एक वीरान जंगल में दाखिल हो गई, वहां कुछ मुअम्मर (यानी बड़ी उम्र के) अफ़राद बैठे थे, उन्होंने ने मुझ से पूछा : “ऐ इब्ने जुबैर ! आप यहां कैसे आ गए ?” मैं ने जवाब देने के बजाए उन से सुवाल कर दिया : “आप लोग कौन हैं ?” उन्होंने ने कहा : “हम जिन्नात हैं।” मैं ने अपने तआकुब और इस का सबब बयान किया, उन्होंने ने कहा : “येह हमारी औरतें (यानी जिन्नियां) हैं। ऐ इब्ने जुबैर ! आप खाने में क्या पसन्द फ़रमाएंगे ?” मैं ने कहा : “ताज़ा पक्की खजूरें।” हालांकि उस वक़्त मक्कए मुकर्रमा में ताज़ा खजूर का कहीं नामो निशान न था। लेकिन वोह मेरे पास पक्की ताज़ा खजूरें ले आए। जब मैं खा चुका तो कहा : “जो बच गई हैं उन्हें साथ ले जाइए।” हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने वोह बची हुई खजूरें उठाईं और घर वापस आ गया। (لَقَطُ الْمَرْجَانِ فِي أَحْكَامِ الْجَانِّ، ص 247)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मफ़िरत हो। اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ग़मे हयात अभी राहतों में ढल जाए तेरी अता का इशारा जो हो गया या ख

(वसाइले बख्शिश, स. 96)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ عَلَی مُحَمَّد

चमकीला सांप

हज़रते अता बिन अबी रबाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا मस्जिदे ह़राम में मौजूद थे कि एक सफ़ेद और

सियाह रंग का चमकीला सांप आया, उस ने बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया फिर वोह “मक्रामे इब्राहीम” के पास आया और गोया नमाज़ अदा कर रहा था तो हज़रते अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا उस के पास आ कर खड़े हो गए और फ़रमाया : “ऐ सांप ! शायद तुम ने उमरे के अरकान पूरे कर लिए हैं और अब मैं तुम्हारे बारे में यहां के ना समझ लोगों से डरता हूं (यानी कहीं वोह तुम्हें अस्ली सांप समझ कर मार न डालें लिहाज़ा तुम यहां से जल्दी चले जाओ) ।” चुनान्वे वोह घूमा और आस्मान की तरफ़ उड़ गया । (لَقَطُ الْمَرْجَانِ فِي أَحْكَامِ الْجَانِ، ص 101)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मफ़िरत हो । اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

कर दे हज़ का शरफ़ अता या रब सब्ज गुम्बद भी दे दिखा या रब
येह तेरी ही तो है इनायत कि मुझ को मक्के बुला लिया या रब
(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ عَلَی مُحَمَّدٍ

सांप नुमा जिन्न ने हज़रे अस्वद चूमा

हज़रते अबू जुबैर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : हज़रते अब्दुल्लाह बिन सफ़वान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ बैतुल्लाह शरीफ़ के करीब बैठे थे कि “इराक़ी दरवाज़े” से अचानक एक सांप दाख़िल हुवा और ख़ानए काबा का तवाफ़ किया फिर हज़रे अस्वद के पास आया और उसे चूमा । हज़रते अब्दुल्लाह बिन सफ़वान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने उस से फ़रमाया : “ऐ जिन्न ! अब आप ने अपना उमरह अदा कर लिया है, हमारे बच्चे ख़ौफ़ज़दा हैं लिहाज़ा आप वापस चले जाइए ।” चुनान्वे वोह जिस तरफ़ से आया था उसी तरफ़ से वापस चला गया । (لَقَطُ الْمَرْجَانِ فِي أَحْكَامِ الْجَانِ، ص 100)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मफ़िरत हो ।
 اَمِيْن بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शरफ़ दे हज का मुझे बहरे मुस्तफ़ा या रब रवाना सूए मदीना हो काफ़िला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 94)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّد

पानी की तरफ़ रहनुमाई करने वाला जिन्न

मुसलमानों के तीसरे खलीफ़ा, हज़रते उस्माने ग़नी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के दौरै ख़िलाफ़त में आशिक़ाने रसूल का एक काफ़िला हज के इरादे से निकला, उन्हें रास्ते में प्यास लगी, एक कुंवां नज़र आया मगर उस का पानी खारा था । लिहाज़ा वोह आगे बढ़ गए, हत्ता कि शाम हो गई लेकिन पानी न मिला । काफ़िला रात भर चलता रहा यहां तक कि एक खजूर के दरख़्त के पास पहुंचा, यकायक एक सियाह फ़ाम मोटा आदमी नुमूदार हुवा, उस ने कहा : ऐ काफ़िले वालो ! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को फ़रमाते सुना है : “जो शरख़्स अल्लाह पाक और क्रियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि वोह मुसलमान भाइयों के लिए वोही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है और मुसलमान भाइयों के लिए वोह चीज़ नापसन्द करे जो अपने लिए नापसन्द करता है ।” तुम लोग यहां से आगे बढ़ो, एक टीला आएगा फिर अपनी दाईं जानिब मुड़ जाना वहां तुम्हें पानी मिल जाएगा । उन में से किसी ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! मेरे खयाल में येह शैतान है, दूसरे शरख़्स ने तरदीद करते हुए कहा : “शैतान इस क़िस्म की बातें नहीं करता, येह कोई मुसलमान जिन्न है ।” बहरहाल वोह लोग चल पड़े और उस जिन्न की निशानदही के मुताबिक़ पानी तक पहुंच गए । (لقط المرحان في احكام الجان، ص 109 لمختصاً)

किसी के हाथ ने मुझ को सहारा दे दिया वरना कहां मैं और कहां यह रास्ते पेचीदा पेचीदा

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ❀❀❀ صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ

गौसे आजम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के क़ाफ़िल हज का पुर असरार जवान

शहंशाहे बग़दाद, हुजूर गौसे पाक हज़रते शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ एक बार अपने मुरीदीन का क़ाफ़िला लिए हज के लिए रवाना हुए, जब यह क़ाफ़िला किसी मन्ज़िल पर उतरता तो सफ़ेद कपड़े में मल्बूस एक पुर असरार जवान कहीं से आ जाता, वोह उन के साथ खाता पीता नहीं था। हुजूर गौसे आजम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने अपने मुरीदों को वसियत (यानी ताकीद) फ़रमाई थी कि वोह इस “जवान” से बातचीत न करें। क़ाफ़िला मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुवा और एक घर में क्रियाम पज़ीर हो गया। जब यह हुज्जाजे किराम घर से निकलते तो वोह पुर असरार जवान घर के अन्दर दाख़िल हो जाता और जब यह दाख़िल होते तो वोह बाहर निकल जाता। एक मरतबा सब लोग निकल गए लेकिन क़ाफ़िले के एक हाजी साहिब बैतुल ख़ला (wash room) में रह गए, इसी दौरान वोह पुर असरार जवान घर में दाख़िल हुवा तो उसे कोई नज़र नहीं आया। उस ने थैली खोली और एक गदर (यानी अध पक्की ख़जूर) निकाल कर खाने लगा। जब वोह हाजी साहिब बैतुल ख़ला से निकले और उन की नज़र उस पुर असरार जवान पर पड़ी तो वोह वहां से चला गया। इस के बाद फिर कभी क़ाफ़िले वालों के पास नहीं आया। जब उन हाजी साहिब ने सरकारे गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ को इस हैरत अंगेज़ बात की ख़बर दी तो फ़रमाया : येह पुर असरार जवान उन जिन्नों में से है जिन्होंने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से क़ुरआने मजीद सुना है।

(لَقَطُ الْمَرْجَانِ، ص 239)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मफ़िरत हो। اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



जिन्नो इन्सानो मलक को है भरोसा तेरा सरवरा मर्जए कुल है दरे वाला तेरा

(ज़ौक्रे नात, स. 23)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

बाग़ के जिन्नात

हजरते अबू इस्हाक़ इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : हमारा क्राफ़िला सूए हरम रवां दवां था, किसी सबब से मैं क्राफ़िले से अलग हो गया और मुसलसल तीन शबाना रोज़ चलता रहा, इस दौरान मुझे न भूक लगी न प्यास, न ही कोई हाज़त पेश आई। आख़िरेकार मैं एक हरे भरे लहलहाते गुल्शन में जा निकला, वहां ख़ूब फलदार दरख़्त थे, हर तरफ़ ख़ुशबूदार फूल खिले थे और बीच में एक छोटा सा तालाब था। मैं ने अपने दिल में कहा : येह तो गोया जन्नत है। अचानक ख़ुश पोश बा इमामा अफ़राद का एक गिरोह आ गया, उन्होंने ने मुझे सलाम किया, मैं ने जवाब दिया, मेरे दिल में ख़याल गुज़रा। हो न हो येह जिन्नात हैं कि येह सरज़मीन ही अजीबो ग़रीब है। इतने में उन में से एक शख्स बोला : “हम क्रौमे जिन्नात में से हैं, हमारा एक मस्अले में बाहम इख़्तिलाफ़ हो गया है। हम ने लैलतुल जिन्न में अल्लाह पाक का मुक़द्दस कलाम बज़बाने शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सुनने का शरफ़ हासिल किया है और उसी पाक कलाम की वजह से तमाम दुनियवी काम हम से ले लिए गए और अल्लाह पाक की मशिय्यत (मर्ज़ी) से इस जंगल में येह तालाब हमारा मक्क़ाम बना दिया गया है। मैं ने दरयाफ़्त किया कि मैं ने अपना हज़ का क्राफ़िला जहां छोड़ा है, वोह जगह यहां से कितनी दूर है ? येह सुन कर उन में से एक मुस्कुराया और कहने लगा : “ऐ अबू इस्हाक़ ! अल्लाह पाक ही के लिए असरार व अज़ाइबात हैं, जहां इस वक़्त आप हैं, एक जवान के सिवा आज तक कोई नहीं आया और वोह भी यहीं वफ़ात पा गया,” येह कह कर उस ने एक तरफ़ इशारा कर के बताया : “वोह रहा इस का



मज़ार ।” वोह मज़ार तालाब के कनारे था और उस के इर्द गिर्द ऐसे खुशनुमा व खुशबूदार फूल खिले हुए थे जो इस से पहले मैं ने कभी न देखे थे । बात जारी रखते हुए उस जिन्न ने कहा : “आप के और क्राफिले के दरमियान इतने इतने महीने की मसाफ़त (यानी फ़ासिला) है ।” हज़रते अबू इस्हाक़ इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं ने उन जिन्नात से कहा : “मुझे उस मर्हूम जवान के बारे में कुछ बताइए ।” तो एक ने कहा : हम यहां तालाब के कनारे बैठे हुए “महब्बत” का तज़िकरा कर रहे थे, हमारी गुफ़्तगू जारी थी कि अचानक एक जवान हमारे पास आया और उस ने सलाम किया । हम ने सलाम का जवाब दिया और उस से दरयाफ़्त किया : “ऐ जवान ! तुम कहां से आए हो ?” बोला : नैशापूर के एक शहर से ।” हम ने पूछा : “तुम वहां से कब निकले थे ?” उस ने जवाब दिया : “सात दिन क़ब्ल । हम ने पूछा : “अपने वतन से निकलने की वजह ?” कहा : “अल्लाह पाक का येह फ़रमान :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब की तरफ़ रुजूआ लाओ और उस के हुज़ूर गर्दन रखो क़ब्ल इस के कि तुम पर अज़ाब आए फिर तुम्हारी मदद न हो ।

وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلُوا لَهُ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿٥٤﴾
(प 24, الزمر: 54)

हम ने उस से कुछ और भी सुवालात किए जिन के जवाबात देते देते उस ने यकायक एक ज़ोरदार चीख मारी और उस की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई । हम ने उसे यहां दफ़न कर दिया और येह उस का मज़ार है (अल्लाह इस से राज़ी हो) हज़रते इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं मर्हूम जवान के औसाफ़ सुन कर बहुत मुतअस्सिर हुवा और अक़्रीदत से मैं मज़ार शरीफ़ के करीब गया तो उस के सिरहाने नरगिस के फूलों का एक बहुत बड़ा गुलदस्ता रखा था और

येह इबारत लिखी हुई थी “هَذَا قَبْرُ حَبِيبِ اللَّهِ قَتِيلِ الْغَيْرَةِ” यानी येह अल्लाह पाक के दोस्त की कब्र है उसे “गैरत” ने क़त्ल किया है। और एक वरक़ पर “أَلَا يُدْرِكُ” का माना लिखा था। फिर जिन्नात ने मुझ से उस आयत की तफ़्सीर पूछी तो मैं ने बयान कर दी। वोह बहुत खुश हुए और उन का आपसी इख़्तिलाफ़ व इज़्तिराब जाता रहा और कहने लगे : हमें हमारे मस्अले का काफ़ी व शाफ़ी जवाब मिल गया। हज़रते इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : फिर मुझे नींद आ गई, जब बेदार हुवा तो (मक्कए मुकर्रमा) में तन्ज़िम के मक़ाम पर हज़रते आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا की मस्जिद के पास अपने आप को पाया और मेरे पास एक “फूलों का गुलदस्ता” मौजूद था जो साल भर तरो ताज़ा रहा फिर कुछ अर्से बाद वोह खुद बख़ुद गाइब हो गया।

(لقط المرحان، ص 240 طحطا)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मफ़िरत हो। اَمِين بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तमन्ना है दरख्तों पर तेरे रौजे के जा बैठे क़फ़स जिस वक़्त टूटे ताइरे रूह मुक़य्यद का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

अजीबो ग़रीब छोटा सा परिन्दा

हज़रते वहब और हज़रते हसन बसरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمَا की हर साल हज़ के मौसमे बहार में मस्जिदे ख़ैफ़ शरीफ़ के अन्दर मुलाक़ात हुवा करती थी। एक शब जब कि भीड़ छट चुकी थी और अक्सर हुज्जाजे किराम सो चुके थे, अलबत्ता बाज़ हुज्जाजे किराम उन दोनों हज़रात के साथ दीनी गुफ़्तगू कर रहे थे, यकायक एक अजीबो ग़रीब छोटा सा परिन्दा आया और हज़रते वहब رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की एक जानिब हल्के में बैठ गया और सलाम किया, हज़रते वहब रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने उस के सलाम का जवाब दिया और पूछा : तुम कौन हो ? उस ने जवाब दिया : मैं एक

मुसलमान जिन्न हूं। पूछा : कहिए कैसे आना हुवा ? बोला : “क्या आप येह पसन्द नहीं फ़रमाते कि हम आप की मजलिस में बैठें और इल्म हासिल करें !” हमारे अन्दर आप से रिवायात बयान करने वाले बहुत से जिन्नात हैं, हम आप हज़रात के साथ बहुत से कामों में शरीक होते हैं मसलन नमाज़, बीमारों की इयादत, नमाज़े जनाज़ा और हज व उमरह वग़ैरा नीज़ आप से इल्म हासिल करते और कुरआने करीम की तिलावत सुनते हैं। (کتاب البوائف لابن ابی الدنيا، 2/526، رقم: 177)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आलमे वज्द में रक्सां मेरा पर पर होता काश ! मैं गुम्बदे खज़रा का कबूतर होता

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

हैवानात के 9 वाकिआत

दरिन्दा भी ताबेअ हो गया

हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ और हज़रते शैबान राई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ दोनों हज के इरादे से निकले तो उन के सामने एक दरिन्दा आ गया। हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ ने हज़रते शैबान राई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ से फ़रमाया : “क्या आप इस दरिन्दे को नहीं देख रहे ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “डरिए मत।” फिर हज़रते शैबान राई रَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ ने उस का कान पकड़ कर दबाया तो वोह दुम हिलाने लगा, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ ने उस की दुम पकड़ ली, इस पर सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : क्या येह “शोहरत” नहीं ? तो उन्होंने ने जवाब दिया : “अगर मुझे शोहरत का ख़ौफ़ न होता तो मैं अपना ज़ादे राह इस की पीठ पर लाद कर मक्कए मुकर्रमा ले जाता।” (الروض الفائق، ص 103)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मफ़िरत हो । **اٰمِيْنَ بِجَاہِ خَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم**

शेर का ख़तरा क्या शेर खुद कांप उठा सामने जब नबी का गुलाम आ गया

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ عَلَی مُحَمَّد

“क्या येह शोहरत नहीं ?” की वज़ाहत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰہ दरिन्दे भी अल्लाह वालों के ताबेअ हो जाते हैं । इस वाकिअ में मशहूर ताबेई बुजुर्ग ज़बरदस्त आलिम व मुहद्दिस सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ का सुवाल करना लोगों को हज़रते शैबान राई رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ के बारे में हुब्बे जाह के तअल्लुक से बद गुमानी से बचाने के लिए था और इस सुवाल का उन्होंने ने भी क्या ख़ूब जवाब इरशाद फ़रमाया । बहरहाल येह बड़ों की बातें हैं येह हज़रात इख़्लास के पैकर हुवा करते थे और एक दूसरे की बातिनी इस्लाह का खयाल रखा करते थे ।

शेर ने रास्ता बताया

हज़रते सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रूम की सरज़मीन में इस्लामी लश्कर से बिछड़ गए और लश्कर की तलाश में दौड़ते हुए चले जा रहे थे कि अचानक जंगल से एक शेर निकल कर उन के सामने आ गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया : **“يَا اَبَا الْحَارِثِ ! اَنَا مَوْلَى رَسُولِ اللّٰہ** : (येह शेर की कुन्यत है) मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुलाम हूं और मेरा मुआमला येह है कि मैं लश्करे इस्लाम से अलग पड़ गया हूं और लश्कर की तलाश में हूं । येह सुन कर शेर दुम हिलाता हुवा उन के पहलू में आ कर खड़ा हो गया और बराबर उन को अपने साथ में लिए हुए चलता रहा यहां तक कि येह लश्करे इस्लाम में पहुंच गए तो शेर वापस चला गया ।

(مشكاة: 2/400، حدیث: 5949)

शेर का खतरा क्या शेर खुद कांप उठा ! सामने जब नबी का गुलाम आ गया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

कुरआने करीम की ताज़ीम करने वाले बन्दर का वाकिआ

मक्तबतुल मदीना की 561 सफ़हात की किताब “मल्फूजाते आला हज़रत” 477 ता 478 पर मेरे आक्रा आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का इरशाद है : एक मरतबा नन्हे मियां (यानी सरकारे आला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के सब से छोटे भाई अल्लामा मुहम्मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ) अपनी छत पर कुरआने अज़ीम पढ़ रहे थे, सामने दीवार पर एक बन्दर बैठा था, येह किसी काम को उठ कर गए, बन्दर दौड़ता हुवा सामने दीवार पर गुज़रा और उस पार जाना चाहता था जैसे ही कुरआने अज़ीम के मुहाज़ात पर (यानी सामने) आया, कुरआने अज़ीम को सज्दा किया और अपनी राह चला गया ।

चांद शक्र हो पेड़ बोलें जानवर सज्दे करें बारकल्लाह मर्जए आलम येही सरकार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 176)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

बारगाहे रिसालत में इस्तिगासा

एक हाजी साहिब मदीनए मुनव्वरा में हाज़िर हुए जिस मकान में मुक्रीम हुए वहां एक बिल्ली रहती थी जो रोज़ाना उन के करीब आती और वोह उस से प्यार करते, हाजी साहिब के मन में मदीने की बिल्ली ख़ूब समा गई थी और उन्होंने ने उसे अपने मुल्क ले जाने की निय्यत कर ली थी । बतमाम हिफ़ाज़त ले जाने के लिए उन्होंने ने एक पिंजरे की भी तरकीब बना ली थी, जब हिजरे मदीना की जां

(मदीनतुरसूल, स. 419 मुलख़ख़सन)

न फ़ुगां के ढंग जानूं न मुझे प्य़कार आए

(ज़ौक्रे नात, स. 242)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

हिरनी की पुकार ब हज़ूर शहंशाहे अबरार

तमाम मुसलमानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान हज़रते उम्मे सलमा رَضِيَ اللهُ عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सहरा में थे। अचानक किसी ने पुकारा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुतवज्जेह हो कर देखा मगर कोई नज़र न आया। फिर दूसरी तरफ़ मुतवज्जेह हो कर देखा तो बन्धी हुई एक हिरनी नज़र आई उस ने अर्ज की : اَذُنْ مِثْلُ يَارَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ यानी या रसूलल्लाह ! मेरे करीब तशरीफ़ लाइए। अल्लाह पाक के हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने करीब तशरीफ़ ला कर फ़रमाया : مَا حَاجَتُكِ ? यानी तेरी क्या हाज़त है ? हिरनी बोली : उस पहाड़ में मेरे दो बच्चे हैं, आप मुझे खोल दीजिए, मैं उन दोनों को दूध पिला कर आप की



ख़िदमत में हाज़िर हो जाऊंगी। फ़रमाया : क्या तू ऐसा करेगी ? हिरनी ने अर्ज़ की : अगर मैं ऐसा न करूँ तो अल्लाह पाक मुझे इशार का अज़ाब दे। (इशार ऐसी हामिली ऊंटनी को कहते हैं जिस का दस माह गुज़र जाने के बाद भी बच्चा बाहर न आए, और उस बेचारी पर बोझ लादा जाए जिस के सबब वोह तकलीफ़ से ख़ूब बिलबिलाए, चीखे चिल्लाए) तो खातमुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उसे खोल दिया और उस ने जा कर अपने बच्चों को दूध पिलाया और इस के बाद वोह आ गई और हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उसे बांध दिया। इतने में आराबी बेदार हो गया और उस ने देख कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप को कोई काम है ? फ़रमाया : हां इस हिरनी को छोड़ दे। उस ने उसे छोड़ दिया। वोह चौकड़ियां भरती हुई जा रही थी और येह कह रही थी : أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ : (मैं गवाही देती हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं)। (معجم كبير، 23/331، حديث 763، الخصائص الكبرى، 2/101)

हां यहीं करती हैं चिड़ियां फ़रियाद

हां यहीं चाहती है हिरनी दाद

इसी दर पर शतराने नाशाद

गिलए रंजो अना करते हैं

(हदाइके बख़्शिश, स. 113)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

ऊंट ने तवाफ़े काबा किया और फिर__ __

815 हि. का वाकिआ है, एक ऊंट अपने मालिक से ख़ुद को छुड़ा कर भाग खड़ा हुवा, यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा पहुंचा और सीधा मस्जिदुल ह़राम में दाखिल हो गया, लोग पकड़ने दौड़े मगर किसी के हाथ में न आया, उस ने काबए मुशरफ़ा के गिर्द सात चक्कर लगाए फिर हज़रे अस्वद पर अपने होंट रख

दिए, इस के बाद मीज़ाबे रहमत के सामने खड़ा हो गया, उस की आंखों से टपटप आंसू गिर रहे थे, इसी तरह रोते रोते वोह ज़मीन पर आ रहा और उस का दम निकल गया। लोगों ने उसे बसद एहतिराम उठाया और सफ़ा व मर्वा के दरमियान दफ़ना दिया। (كتاب الحج، ص 114 طحطا) (उस दौर में आज कल की तरह का मुआमला न था वहां तदफ़ीन मुम्किन थी चुनान्चे शाह अब्दुल अजीज़ मुहदिस देहल्वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने बुस्तानुल मुहदिसीन सफ़हा 298 पर लिखा है : मशहूर मुहदिस हज़रते इमाम नसाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ सफ़ा व मर्वा के दरमियान मदफून हैं)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मफ़िरत हो। اٰمِيْنَ بِجَاوِحَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तसदुक्र हो रहे हैं लाखों बन्दे गिर्द फिर फिर कर

तवाफ़े खानए काबा अजब दिलचस्प मन्ज़र है

صَلُّوْا عَلَى النَّبِيِّ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ऊंटों ने आक्रा को सज्दा किया

गैलान बिन सलमा सक़फ़ी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : हम एक सफ़र में मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हमराह थे, हम ने एक अजीब बात देखी (और वोह येह कि) हम एक मन्ज़िल में उतरे, वहां एक शख्स ने हज़िर हो कर अर्ज़ की : या नबिय्यल्लाह ! मेरा एक बाग़ है कि मेरी और मेरे इयाल की वोही वजहे मआश (यानी गुज़र बसर का ज़रीआ) है इस में मेरे दो शुतर (यानी दो ऊंट) आबकश (कुंवे से पानी खींचने वाले) थे, दोनों मस्त हो गए न अपने पास आने दें न बाग़ में क़दम रखने दें, किसी की ताक़त नहीं कि क़रीब जाए। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मअ सहाबए किराम (عليهم الرضوان) उठ कर उस के बाग़ को गए। फ़रमाया : खोल

दे, अर्ज की, या नबिय्यल्लाह ! इन का मुआमला इस से सख्त तर है, फ़रमाया : खोल, दरवाज़े को जुम्बिश (यानी हरकत) होनी थी कि दोनों (ऊंट) शोर करते हवा की तरह झपटे दरवाज़ा खुला और उन्होंने ने जब हुज़ूर अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा फ़ौरन सज्दे में गिर पड़े ! हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के सर पकड़ कर मालिक के सिपुर्द कर दिए और फ़रमाया : “इन से काम ले और चारा बखूबी दे ।” हाज़िरीन ने अर्ज की : या नबिय्यल्लाह ! चौपाए हुज़ूर को सज्दा करते हैं तो हुज़ूर के सबब हम पर अल्लाह की नेमत तो बेहतर है, अल्लाह ने गुमराही से हम को राह दिखाई और हुज़ूर के हाथों पर हमें दुनिया व आखिरत के मोहलिकों (यानी हलाक करने वाली चीज़ों) से नजात दी, क्या हुज़ूर हम को इजाज़त न देंगे कि हम हुज़ूर को “सज्दा” करें ? नबी صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सज्दा मेरे लिए नहीं, वोह तो उसी ज़िन्दा के लिए है जो कभी न मरेगा, उम्मत में किसी को सज्दे का हुक्म देता तो औरत को सज्दए शौहर का । (दलाल النبوة، ص 228)

मलक व जिन्नो बशर पढ़ते हैं कलिमा उन का जानवर संगो शजर करते हैं चर्चा उन का

(क़बालए बख़्शिश, स. 57)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ﷺ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ مُحَمَّدٌ

ग़मे मुस्तफ़ा में जान देने वाले दो बे ज़बान

सुलताने दो जहान صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के सबब इन्सो जान के साथ साथ बे ज़बान हैवान भी सदमे से दोचार हुए ❶ एक दराज़गोश (यानी गधा) जिस पर जनाबे महबूबे बारी صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर सुवारी फ़रमाया करते थे, फ़र्ते ग़म से बेताब हो कर उस ने एक कुंवें में छलांग लगा कर जान दे दी ❷ सरवरे अम्बिया صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की खास ऊंटनी भी दीदारो मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के बग़ैर बेकरार रहने लगी, खाना पीना छोड़ दिया और इस तरह उस ने भी भूक प्यास से जान दे दी । (مدارج النبوت، حصه: 2، ص 444)

उन के दर पर मौत आ जाए तो जी जाऊं हसन उन के दर से दूर रह कर ज़िन्दगी अच्छी नहीं

(जौक्रे नात, स. 187)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

हरम शरीफ़ के कबूतरों की आस्तानए महबूब से महब्बत

कुल्बे मदीना सय्यिदी व मुर्शिदी हजरते अल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : एक मरतबा इन्तिज़ामिया ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ के हरमे अनवर को साफ़ सुथरा रखने के लिए फ़ैसला किया कि हरम शरीफ़ में कबूतरों के लिए दाना न डाला जाए, इस तरह कबूतर दाने की तलाश के लिए दूसरी जगहों में मुन्तक़िल हो जाएंगे। इस हुक्म पर अमल किया गया और कई दिन तक दाना न डाला गया मगर कबूतरों की गुम्बदे ख़जरा से महब्बत का येह आलम था कि भूक से मर रहे थे मगर आस्तानए महबूब صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ छोड़ने के लिए तय्यार नहीं थे। अहले मदीना ने अपनी आंखों से येह इश्को महब्बत भरा मन्ज़र देखा, फिर दुनिया में येह बात शोहरत पकड़ गई तो लोगों ने हुक्मत को तार दिए और इसरार किया, तब हुक्मत ने फिर हस्बे साबिक़ कबूतरों को दाना डालना शुरू किया।

(अन्वारे कुल्बे मदीना, स. 54 मुलाख़बसन)

(अन्वारे कुत्बे मदीना, स. 54 मुलखखसन)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।
 اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

वोह मदीने के प्यारे कबूतर जब नज़र आ तुझ को बिरादर

उन को थोड़े से दाने खिला कर तू सलाम मेरा रो रो के कहना

(वसाइले बख्शिश, स. 592)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



اگلے ہفتے کا ریسالا



DAWATUL ISLAMI
INDIA

FGN
Channel
Dekhte Rahiye



Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, **Mumbai :** 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi
Delhi-110006 ☎ +91-8178862570 Post Office, Mumbai-400003 ☎ +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, **Nagpur :** Opp. Garib Nawaz Masjid, Saiji Nagar
Mirzapur, Ahmedabad-380001 ☎ +91-9327168200 Road, Mominpura, Nagpur-440018 ☎ +91-9326310099

🌐 www.maktabatulmadina.in ✉ feedbackmmhind@gmail.com

📦 For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) ☎ +91-9978626025